नैक (NAAC) द्वारा "A" ग्रेड प्राप्त

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya, Wardha

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

जनसंपर्क विभाग- Ph./Fax: 07152-252651 मो.9960562305 इ-मेल: mgahvpro@gmail.com

वेबसाइट : www.hindivishwa.org

हिंदी का वनवास पैंसठ सालों बाद भी जारी है– प्रो. चंद्रकला पाण्डेय

हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के क्षेत्रीय कैंद्र कोलकाता में 'हिंदी दिवस समारोह' आयोजित

19 सितंबर, 2016, वर्धा: प्रसिद्ध आलोचक, कवि एवं राज्यसभा की पूर्व सांसद प्रो. चंद्रकला पाण्डेय ने हिंदी भाषा की तुलना राम के वनवास से करते हुए कहा कि जिस प्रकार अयोध्या की गद्दी पर राम की चरण पादुका रखी हुई थी, उसी प्रकार भारत की भाषा की गद्दी पर अंग्रेज़ी को रखा गया है और हर पंद्रह साल पर संविधान संशोधन कर अगले पंद्रह साल के लिए अंग्रेज़ी का कार्यकाल बढ़ा दिया जाता है। राम का वनवास तो चौदह वर्ष का था, लेकिन हिंदी का वनवास आज पैंसठ सालों बाद भी जारी है और आगे भी ना जाने कितने सालों तक जारी रहेगा। उन्होंने अपने राज्यसभा कार्यकाल के दौरान हिंदी भाषा की उन्नति के लिए किए गए अपने प्रयासों

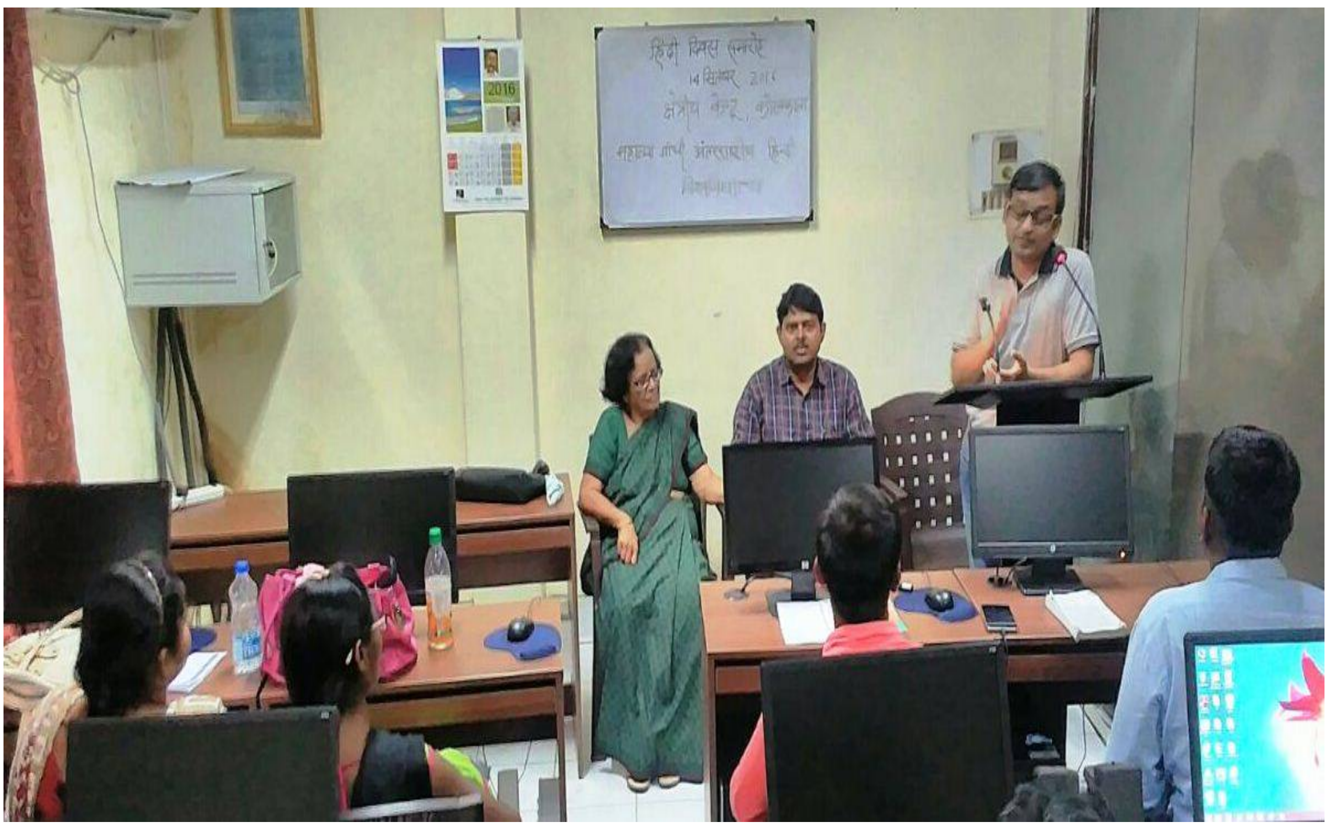

और अनुभवों को विस्तार से बताया। प्रो. पाण्डेय महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के क्षेत्रीय केन्द्र, कोलकाता में हिंदी दिवस समारोह की अध्यक्षता कर रही थी।

कार्यक्रम का संचालन हिंदी के सहायक प्रोफेसर डॉ. सुनील कुमार 'सुमन' ने किया। कार्यक्रम के आरंभ में डॉ. सुनील ने कहा कि हिंदी की ताक़त उसकी विभिन्न उपभाषाएँ और बोलियां हैं। हिंदी का नुकसान राजनैतिक कारणों से ज्यादा हुआ है। हिंदी को ज्ञान-विज्ञान और बौद्धिकता की भाषा बनाना ज्यादा जरूरी है, तभी इसका महत्व स्थापित हो पाएगा। उन्होंने कहा कि सरकारी कामकाज की हिंदी सरल व सहज होनी चाहिए। शुद्धतावाद ने भी हिंदी का बहुत नुकसान किया है।

'सहारा समय' न्यूज़ चैनल के कोलकाता ब्यूरो चीफ रजनीश ने अपने वक्तव्य में कहा कि आजकल के माता-पिता अपने बच्चों को हिंदी में शिक्षा देना नहीं चाहते। अपने बच्चे को अंग्रेज़ी बोलते और पढ़ते देख उन्हें

गर्व होता है। उन्होंने अंग्रेजी भाषा के अखबारों का उदाहरण देकर बताया कि किस प्रकार वे लोग हिंदी भाषा के शब्दों को अपने लिए ग्राह्य बनाते हैं जबकि हमलोग अंग्रेजी का हिंदी में अनुवाद करके उसे और कठिन बना देते हैं। यह हिंदी वालों की हीनभावना और अंग्रेज़ी वालों की प्रगतिशीलता है। एम.ए. जनसंचार के छात्र रजनीश कुमार प्रसाद ने कहा कि इच्छाशक्ति के बिना हिंदी का विकास आसान नहीं है। एम.ए. जनसंचार के छात्र विनीत ने चार राज्यों में रहते हुए हिंदी भाषा पर अपने अनुभवों को सुनाया। अशोक ने हिंदी दिवस पर अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया। आयोजन के विशेष आकर्षण ''रचना पाठ'' के अंतर्गत विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों ने विविध भाषाओं के प्रसिद्ध लेखकों की रचनाओं का पाठ किया। इस क्रम में मयंक ने नागार्जुन की मैथिली

कविता, कुमारी शीला गुप्ता ने अवतार सिंह पाश की पंजाबी कविता, वंदना सिंह ने उमाशंकर जोशी की गुजराती कविता, रितेश ने जी. शंकर कुरुप की मलयाली कविता और मौसमी गुप्ता ने सुब्रह्मण्यम भारती की तमिल कविता का हिंदी अनुवाद को सुंदर ढंग से पेश किया। नेहा चौधरी ने मुक्तिबोध, पंकज साव ने सर्वेश्वर दयाल सक्सेना और काजल कुमारी सिंह ने सौरभ नीरव की कविता का पाठ किया, वही रजनीश और अशोक जांगिड़ ने स्वरचित रचना का पाठ किया।

कार्यक्रम के अंत में अध्यक्ष अंत में आभार ज्ञापन जनसंचार के छात्र कुणाल किशोर ने किया। इस अवसर पर केंद्र के अध्यापक, विद्यार्थी एवं कमी प्रमुखता से उपस्थित थे।